शास्त्रीय योग

सर्वार्थ चिन्तामणि - 11 ज्योतिषीय योगों की युति, जिन्होंने उत्तम कार्य किया है।

1 यदि पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और पंचमेश शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, बच्चों का जन्म निश्चय होता है।

2 यदि पंचम भाव, पंचमेश या गुरू पर शुभ दृष्टि हो, बच्चों का जन्म निश्चय होगा।

3 यदि लग्नेश बलवान हो और पंचम भाव में हो और गुरू भी बलवान हो, बच्चों का जन्म निश्चय होता है।

4 यदि पंचमेश गुरू बलवान हो उस पर बलवान लग्नेश की दृष्टि हो, बच्चों का जन्म निश्चय होता है।

5 यदि पंचमेश गुरू बलवान हो उस पर बलवान लग्नेश की दृष्टि हो, बच्चों का जन्म निश्चय होता है।

6 यदि गुरू और पंचमेश वैशिशिकम्शा में हो (वर्ग जन्म कुण्डली के दश शुभ वर्गो में), बच्चों का जन्म निश्चय होता है।

7 यदि लग्नेश और पंचमेश दोनों साथ हों या दोनों एक दूसरे से दृष्ट हों या दोनों का आपस में स्थान परिवर्तन हो, बच्चों का जन्म निश्चय होता है।

8 यदि लग्नेश और पंचमेश चतुर्थांश हों द्वितीयेश बलवान हो, बच्चों का जन्म निश्चय होता है।

9 जन्म कुण्डली के पंचमेश का नवाँश के स्वामी का पता करें। यदि ग्रह अच्छी स्थिती में हो या जन्म कुण्डली में अच्छा दृष्ट हो तो बच्चों का जन्म निश्चित है।

10 यदि लग्नेश और सप्तमेश दोनों सप्तम भाव में हो और द्वितीयेश लग्न में हो, बच्चों का जन्म निश्चय होता है।

11 जन्म कुण्डली के सप्तमेश का नवाँश के स्वामी का पता करें। यदि वह ग्रह लग्नेश, नवमेश या द्वितीयेश से दृष्ट हो तो बच्चों का जन्म निश्चित है।

गुलिक - वृहत पाराशर होरा शास्त्र के अध्याय 25 का सार

12 यदि गुलिक लग्न में है तो जातक रोगी, कामी, पापी, शठ, दुष्ट-स्वभाव और अति दु:खी होता है।

13 यदि गुलिक द्वितीय भाव में है तो जातक विकृत, दु:खी, क्षुद्र, व्यसनी, अधर्मी, निर्लज्ज और निर्धन होता है।

14 यदि गुलिक तृतीय भाव में है तो जातक सुन्दर स्वरूप, गाँव का मुखिया, पुण्यवान, सज्जनों का प्रिय और राजमान्य होता है।

15 यदि गुलिक चतुर्थ भाव में है तो जातक रोगी, सुख-हीन, पापी, वात और पित रोग व चिड़चिड़ेपन से पीड़ित होता है।

16 यदि गुलिक पंचम भाव में है तो जातक निन्दक, निर्धन या गरीब, अल्प-बुद्धि, द्वेषी, क्षुद्र, वीर्य-हीन, स्त्री का वशवर्ती और नास्तिक होता है।

17 यदि गुलिक षष्ठ भाव में है तो जातक शत्रु हीन, पुष्ट-देह, तेजस्वी, स्त्री का प्रिय, उत्साही, स्थिर और लोक हितकारी होता है।

18 यदि गुलिक सप्तम भाव में है तो जातक स्त्री का वशवर्ती, महा-पापी, दुर्बल देह, मैत्री हीन और स्त्री के धन पर निर्भर रहने वाला होता है।

19 यदि गुलिक अष्टम भाव में है तो जातक क्षुधा से पीड़ित, दुःखी, क्रूर, कठिन रोग वाला, निर्दयी, निर्धन और निर्गुण होता है।

20 यदि गुलिक नवम भाव में है तो जातक बहुत कष्ट वाला, दुर्बल देह, कुकर्मी, निर्दयी, आलसी और चुगलखोर होता है।

21 यदि गुलिक दशम भाव में है तो जातक पुत्रवान, सुखी, भोगी, भगवान व अग्नि का पूजा करने वाला और चिन्तन करने वाला व धार्मिक प्रवृति का होता है।

22 यदि गुलिक एकादश भाव में है तो जातक भोगी, लोगों का मुखिया, बन्धुओं का उपकारी, छोटा-कद और सर्वत्र पूज्य होता है।

23 यदि गुलिक द्वादश भाव में है तो जातक नीच कर्म करने वाला, पापी, अंगहीन, भाग्यहीन, आलसी और नीचों से संग करने वाला होता है।

अध्याय 16 - यदि पंचम भाव में शनि या बुध स्थित हों, युत हो या शनि या मान्दी द्वारा दृष्ट हों, ऐसे जातक के दत्तक/कृत्रिम पुत्र होता है।

16 - 23, यदि मान्दी लग्न में हो और लग्नेश अपने नीच में हो तो जातक को 56 वर्ष की आयु में पुत्र शोक (दुःख) होता है।